19.11.67रात्री क्लास–

बाबा का विचार है यह जो अपना त्रिमूर्ति है लिखत सहित बाबा समझाते हैं कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं है, शिव है। इनका भी चित्र जैसे बनकर आया है। अब अखबार में तो इतने बड़े नहीं डलते। अक्षर भी पतले होते हैं। बाबा को अखबार का कॉलम बनाकर दो और ब्लॉक बनाना पड़ेगा। विचार है कि जांच करनी चाहिए। कॉन्ट्रक्ट किया जाता है कि इतने हजार इतने इंच लेंगे। फिर जब जो देवें। अखबार एक/दो मुख्य है। दो/तीन बड़े ले लेवें जो ऐसे कब2 अखबार में डालते रहें। .....इसमें तो कुछ है नहीं, बाबा तो समझाते रहते हैं कि यह2 डालो। वा तो अपनी अखबार निकालो हिम्मत करके। जो चाहिए सो करो। बाप तो राइट ही सिखलाते हैं। जैसे नाभी से नेहरू निकला, वैसे तुम भी लिख सकते हो। विष्णु की नाभी कमल से ब्रह्मा निकला। लिखते तो बहुत हैं। तो अखबार भी निकले बड़े2 दो/चार सेंटर भी खुल जाये तो कोई जोर लगाये ना सकेंगे उड़ाने करने का। ऐसे2 खयाल चलने चाहिए। अखबार से भी प्रभाव निकलेगा। बाबा ऐसे देते हैं कि यह करना चाहिए। फिर बच्चों को प्रदर्शनी कमेटी को खड़ा होना चाहिए। जो अब तक सोये पड़े हैं,ध्यान नहीं देते हैं कि बाबा का क्या विचार है। सोया न रहना चाहिए। कुछ न कुछ ठीक करना चाहिए। तुम्हारे पास तो सत्य ही सत्य है। सत्य का भी एडवोटाइज चाहिए ना। बच्चे अभी इतने तीखे नहीं हुए हैं। सम्पूर्ण तो नहीं बने हैं ना। देखने में आता है कि कुछ तीखा पुरुषार्थ होना चाहिए। ऐसे2 कुछ करो तो नाम जास्ती होवे बाहर में। बाबा सबके लिए

कहते हैं। कई बच्चे सर्विस का शौक रखते हैं तो कोई ठंडे पड़ जाते हैं। कोई बात में नाराज हुए तो कोई न सुनी तो बस छोड़ देते हैं। बाबा कुछ कहते हैं तो फिर फीलिंग आ जाती है। बाप का तो हक है कि कुछ भी समझाय सकते हैं। मैजॉरिटी में भी कहते हैं कि बच्चे ठंडे हैं। एक/दो में ..... नहीं देते हैं। शेर–बकरी इकट्ठे जल पीते हैं सतयुग में। वह अवस्था अभी यहां हुई नहीं है। गायन है कि बाबा चाहे प्यार करो चाहे ठुकराओ, चाहे कुछ भी करो ;परंतु वो अवस्था है नहीं। वो नशा बापदादा का वा वफादारी का। लव है बहुत कम। जब आगे चले तब पक्का हो। बाबा तो सबके लिए कहते हैं पाई–पैसे की बात में रूठ पड़ते हैं। कोई की परीक्षा लेवें तो भी मर पड़ते हैं। रहना तो या इस तरफ है या उस तरफ है। जैसे कि किनारे पर खड़े हैं। थोड़ा कहो तो गिरे खूह में। इसलिए बाबा बड़े शांत से काम लेते हैं। कम बोलना अच्छा है। सुनते होते भी कुछ बोलेंगे नहीं। चुप रहते हैं ;क्योंकि अवस्था बिल्कुल नाजुक है। थोड़ा कहो तो यह गिरे। बाबा फिर समझाते हैं कि अच्छा ना लगेगा। किसी की ग्लानी सुननी पसंद ना करेंगे। कोई तो बहुत खुशी से सुनते हैं। जिससे दिल खराब हो सुननी न चाहिए;परंतु कितना भी समझाओ सुधरते नहीं हैं। एक कान से सुनी तो दूसरे से निकाल दी। हर बात में बाप को समझाना पड़ता है। बाप आये हैं पतितों को पावन बनानो। यह तो बच्चे समझते हैं कि 99प्रतिशत भी सजा खाते हैं। बाकी एक प्रतिशत रहता है। एक प्रतिशत भी न रहे तो सतयुग में न जा सके। राजधानी स्थापन होनी है। एक प्रतिशत भी पास हो तो स्वर्ग में चले जावेंगे;परंतु पद क्या पावेंगे। अविनाशी ज्ञान है ना। बाबा तो कहेंगे कि एम ऑब्जेक्ट यह देखो। ऐसे नहीं कि इनके आगे आंखें बंद कर दो। टीचर तो कहेंगे कि अच्छा पास हो। यहां निंदा वा डिग्रेड की बात नहीं। जानते हैं कि कल्प पहले जितना लिया उतना ही लेंगे। ड्रामा की बात है नहीं। डिनायस्टी स्थापन हो रही है। बहुत बड़ा क्लास है। बहुत फर्क पड़ जाता है। कहां राजा फिर कम–(कम) पद है। तो है तो सही ना। पूरा ना पढ़ने से कम पद हो जाता है। बाप कहेंगे कि पुरुषार्थ कर कुछ ना कुछ मार्क्स लो। अपना पद अच्छा बनाओ। कइयों का तो पद रखना ही फाल्तू हो जाता है। क्या करेंगे? बाप पुरुषार्थ तो कराते हैं। डीटी डिनायस्टी तो बनानी है। पहले2 पुरुषार्थ कर विकर्माजीत बनो फिर जो होना होगा सो होगा। सतोप्रधान तो बनो ना।

यह ल.ना. अभी नहीं हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। पुनर्जन्म भी यह ही लेते हैं। आत्मा कहां जावेगी नहीं। जितना पुरुषार्थ करेंगे आत्मा वही 84जन्म भी वही लेती है। आत्मा कब भी विनाश नहीं होती है। थोड़ा सा भी ज्ञान सुनकर चली जाती है। इनका जैसे कि हिसाब ही नहीं है। ऐसे नहीं कि बाबा को देखेंगे,नहीं। ऐसे बहुत आते और चले जाते होंगे। बाबा कहते हैं कि अविनाशी ज्ञान का विनाश कब होता नहीं है। यह डायनेस्टी बहुत बड़ी है। बाबा सबसे मिल भी नहीं सकते। देख भी नहीं सकते। न इतना पुरुषार्थ ही कर सकते हैं। इस ज्ञान को स्मरण करने से इसमें बहुत समझने की बातें हैं। जहां भी हो वो विचार–सागर–मंथन करते रहो। अच्छी रीत पढ़ने वाले दिल पर चढ़ते हैं। नाम बाला भी इनका ही होता है। यह सब खयालात बच्चों को रखने हैं। सर्विस भी बढ़ानी है। सर्विस पर समाचार भी आता है। बहुत सर्विस करके भी गिर पड़ते हैं। तो भी जो थोड़े सर्विस करते हैं उनसे तो उंच पद पावेंगे। तुम बच्चों को गुप्त कितना माल मिल रहा है। दुनियां को थोड़ा ही पता है। तुम्हारी मेहनत निष्फल नहीं होती। कब न कब आ जावेंगे। इस ज्ञान मार्ग में सरलता ,धैर्य बहुत चाहिए। बाबा सदैव कहते हैं कि छी2 बात हो तो हियर नो ईविल,टॉक नो ईविल। मीठा, सहनशील बनना चाहिए। कोई चीज न मिले तो गुस्से में अंडा जल जावेगा ऐसे भी न होना चाहिए। यह सब अनेक प्रकार की अवस्थायें हैं। चलन बहुत अच्छी चाहिए। एक/दो से बिगाड़ दिल खराब न हो जाना चाहिए। औगन(अवगुण) सब निकाल गुणवान बनना चाहिए। हर बात में गुण उठाना चाहिए। बड़ी मंज़िल है। अच्छा ,मीठे2 सिकीलधे बच्चे को रुहानी बाप वा दादा का यादप्यार और गुडनाइट।